Quest Journals
Journal of Hindi, Political Science and Home Science
Volume 15 ~ Issue 6 (Nov. – Dec. 2025) pp: 37-42
ISSN(Online) : 2347 – 2305
www.questjournals.org

Research Paper

साहित्यिक राष्ट्रवाद और सुभद्रा कुमारी चौहान : कलम से क्रांति के ओर

खुशबू कुमारी (शोधार्थी)

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वर नगर, दरभंगा

शोध-सार–

हिंदी साहित्यिक भाल पर प्रख्यात राष्ट्रवादी कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान जिन्होंने अपनी कलम को स्वतंत्रता आंदोलन का सशक्त माध्यम बनाया। सुभद्रा कुमारी चौहान का साहित्य वह चित्रशाला है, जिसमें एक से बढ़कर एक जंग- ए- आजादी के छोटे-बड़े चित्र इत्र की तरह खुशबू विकीर्ण कर रहे हैं। यह खुशबू 'झाँसी की रानी' से ही शुरु हुई और अंत तक बनी रही। 'झाँसी की रानी' से सुभद्रा जी को नयी कवयित्री के रुप में स्थाई पहचान भी मिली। उनकी रचनाओं में देश-भक्ति की भावना, वीरता, त्याग, जनमानस की सेवा, स्त्री-शक्ति स्पष्ट परिलक्षित होता है। इन्होंने केवल कविता लिखकर ही नहीं बल्कि, स्वयं स्वाधीनता संग्राम में सक्रिय भूमिका निभाते हुए 'कलम से क्रांति तक' की अवधारणा को जन- जन में साकार किया।

सुभद्रा कुमारी चौहान का साहित्य साहित्यिक राष्ट्रवाद, राजनीतिक राष्ट्रवाद तक ही सीमित नहीं है, अपितु नारी-शक्ति-जागृति और सामाजिक जागृति के समन्वय से आलोकित है।

उनकी रचनाएं सरल भाषा, अर्थगम्य विचार, भावनात्मक प्रभाव और जनमानस से जुड़ाव के कारण जन-जन के हृदय में बस गई।

इस प्रकार हम कह सकते हैं की सुभद्रा कुमारी चौहान का साहित्य भारतीय स्वाधीनता आंदोलन का सांस्कृतिक दस्तावेज है। उनकी कलम ने जन-जन में जागृति का आह्वान किया।

बीज शब्द : *स्वतंत्रता आंदोलन, सशक्त, राष्ट्रवाद, स्त्री-शक्ति, देश-भक्ति, परिलक्षित, विकीर्ण, जागृति, आह्वान।*

प्रस्तावना–

साहित्यिक राष्ट्रवाद वह विचारधारा है, जिसमें साहित्य-सृजन के माध्यम से जन-जन में राष्ट्रप्रेम, राष्ट्रीय चेतना, सांस्कृतिक गौरव, स्वतंत्रता की भावना और सामाजिक एकता को अभिव्यक्त किया जाता है। यह केवल राजनीतिक स्वतंत्रता तक सीमित नहीं होता, बल्कि भाषा, संस्कृति, इतिहास, परंपरा और जनभावनाओं के संरक्षण एवं विकास से भी जुड़ा होता है।

हिन्दी साहित्याकाश पर राष्ट्रीयता की भावना से ओतप्रोत सुभद्रा कुमारी चौहान के रग रग में देश-भक्ति की भावना, देश-प्रेम की भावना भरी हुई है। इसलिए उनकी कविताएँ राष्ट्र-प्रेम, देश-प्रेम एवं वीर रस से सराबोर दिखतीं हैं।

स्वाधीनता आंदोलन और साहित्य का अंतर्संबंध गहरा सदा ही रहा।भारतेंदु युग में साहित्य ने सामाजिक सुधार, बाल विवाह और स्त्री-शिक्षा जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर विशेष बल दिया। भारतेंदु जी के निबंध, पत्र और कविता ने जनता में राष्ट्रीय चेतना और जागरुकता फैलाने का कार्य किया।

द्विवेदी युग में साहित्य ने अधिक नैतिक और वैचारिक अनुशासन अपनाया। कवियों और लेखकों ने समाज में कर्तव्य, त्याग और अनुशासन का संदेश दिया। उनके लेखन ने युवाओं को आंदोलन में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित किया। ऐसे ही साहित्यकारों में सुभद्रा कुमारी चौहान का नाम विशेष रुप से रेखांकित है।

"बचपन से ही कलम से हुआ सुभद्रा जी को प्यार।

कलम-क्रांति के पथ पर आयी बनकर सत्य बहार॥
बनकर सत्य - बहार लिखीं कविता और कहानी।
बहती रही सदा जीवन भर बनकर गंगा का पानी॥
कहती कवयित्री 'खुशबू' बढी साहित्यिक कीर्तन से।
हुई कलम- क्रांतिकारिणी, सुभद्रा जी बचपन से ॥"(स्वरचित)

सुभद्रा कुमारी चौहान बचपन से ही कलम उठा लीं। सर्वप्रथम उन्होंने 'नीम के पेड़' पर कविता लिखीं। कविता लिखने के लिए उनके घर से ही प्रोत्साहन मिला। उनके रज्जू भैया ने उन्हें घर के सामने लगे पेड़ पर कविता लिखने को कहा। उनकी कविता 'नीम के पेड़' मर्यादा पत्रिका जून-जुलाई में प्रकाशित हुई थी। यह कविता मात्र नौ साल में उन्होंने लिखी थी।

"सब दुखहरन सुखकर परम हे नीम! जब देखूं तुझे।
तुहिं जानकर अति लाभकारी हर्ष होता है मुझे ॥

ये लहलही पत्तियाँ हरी, शीतल पवन बरसा रहीं।
निज मंद मीठी वायु से सब जीव को हरषा रहीं॥"[1]

इस कविता में नीम के पेड़ के औषधीय गुणों और उसके परोपकारी स्वभाव का बहुत ही सुंदर वर्णन किया गया है। इसमें हरि से प्रार्थना किया गया है कि जब तक नभ में सूरज चंद्र तारे रहेंगे तब तक तुम इस जग में फला फूला करो और सदा ही इस देश में पथिकों को शीतल वायु और शीतल छाया से हरा भरा रखो।

इस प्रकार हम देखते हैं कि सुभद्रा कुमारी चौहान की काव्य-शक्ति बचपन से ही सृजित होने लगी।

सुभद्रा कुमारी चौहान पर गांधी जी का प्रभाव भी स्पष्ट दिखता है। पहला सत्याग्रह: 1921 में वे महात्मा गांधी के असहयोग आंदोलन में कूद पड़ीं। वे असहयोग आंदोलन में गिरफ्तार होने वाली पहली महिला सत्याग्रही थीं। उन्होंने राष्ट्रीय आंदोलनों में सक्रिय रुप से भाग लिया और 1923 तथा 1942 में स्वतंत्रता संग्राम के दौरान जेल भी गईं।

राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत उनकी कविताएँ जो आज भी जन-जन के हृदय में बसी हुई है, आज भी जन-जन के हृदय में राष्ट्रीय भावनाओं को जाग्रत करती है और उन्हें देश के लिए आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है। सोई हुई चेतना को जगाती है,बच्चे, युवाओं के रोम-रोम में देश-प्रेम की भावना को भर देती है।

"सिंहासन हिल उठे राजवंषों ने भृकुटी तानी थी,
बूढ़े भारत में आई फिर से नयी जवानी थी,
गुमी हुई आज़ादी की कीमत सबने पहचानी थी,
दूर फिरंगी को करने की सब ने मन में ठनी थी।
चमक उठी सन सत्तावन में, यह तलवार पुरानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वो तो झाँसी वाली रानी थी।"[2]

यह कविता आज भी बच्चे-बुजुर्ग, युवा सभी के जुबान पर बसी हुई है। हिंदी साहित्य की कालजयी रचनाओं में से एक है– 'झांसी की रानी'। इस कविता में कवयित्री ने 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की पृष्ठभूमि में झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई की वीरता, देशभक्ति और आत्मसम्मान को अत्यंत ओजपूर्ण शैली में प्रस्तुत किया है। अंग्रेजों ने झाँसी पर अधिकार करने का प्रयास किया, लेकिन रानी लक्ष्मीबाई ने हार नहीं मानी और अपने राज्य तथा देश की रक्षा के लिए युद्ध के मैदान में उतर गई।

इतना ही नहीं इन्होंने स्वतंत्रता की नींव रखने वाली लक्ष्मीबाई झांसी की रानी की समाधि पर भी कविता लिखी है–

"इस समाधि में छिपी हुई है,
एक राख की ढ़ेरी।

जलकर जिसने स्वतंत्रता की,
दिव्य आरती फेरी॥"[3]

इस पंक्ति के माध्यम सुभद्रा जी कहना चाहती हैं कि झांसी की रानी की यह छोटी सी समाधि केवल एक राख की ढेरी नहीं है, अपितु यह वह पवित्र स्थान है जहां लक्ष्मीबाई झांसी की रानी ने खुद को जलाकर देश की स्वतंत्रता के लिए एक दिव्य आरती और यज्ञ की है।

देशभक्ति की भावनाओं से ही प्रेरित उनकी एक और कविता 'वीरों का कैसा हो वसंत'द्रष्टव्य है–

"वीरों का कैसा हो वसंत?
आ रही हिमाचल से पुकार,

है उदधि गरजता बार-बार,
प्राची, पश्चिम, भू, नभ अपार,
सब पूछ रहे हैं दिग्-दिगंत,
वीरों का कैसा हो वसंत?
हल्दी-घाटी के शिला-खंड,
ऐ दुर्ग! सिंह-गढ़ के प्रचंड,

राणा-ताना का कर घमंड,
दो जगा आज स्मृतियाँ ज्वलंत,

वीरों का कैसा हो वसंत?"[4]

उद्धृत पंक्तियों से भी स्पष्ट होता है कि राष्ट्रवादी भावना से वशीभूत सुभद्रा कुमारी चौहान ने एक ओर जहाँ झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई के माध्यम से नारी सशक्तिकरण को रेखांकित किया है ,वहीं दूसरी ओर वीरों का कैसा हो बसंत कविता के माध्यम से नवयुवक और नवयुवकों को क्रांतिकारी वसंत अपनाने की सलाह भी दी है। ऐसा प्रतीत होता है कि सुभद्रा कुमारी चौहान में जयशंकर प्रसाद के चंद्रगुप्त नाटक की अलका का क्रांतिकारी आलोक पूर्णतः भरा हुआ है।

"आ, स्वतंत्र प्यारे स्वदेश आ,
स्वागत करती हूँ तेरा।
तुझे देख कर आज हो रहा
दूना प्रमुदित मन मेरा॥"[5]

उद्धृत पंक्तियों के माध्यम से सुभद्रा कुमारी चौहान स्वतंत्रता का स्वागत करती है, देश भक्ति की भावना को जागृत करती हैं। जनता को पराधीनता से मुक्त होकर स्वाभिमान और एकता का संदेश दे रहीं हैं।स्वतंत्र देश को देखकर हृदय में उत्पन्न गर्व, प्रसन्नता और उत्साह को व्यक्त करती हैं।

स्वाधीनता मनुष्य के सम्मान, विकास और आत्मविश्वास की आधारशिला है। सरोजिनी नायडू, गोपाल सिंह नेपाली, निराला, जन-गण-मन के रचयिता रवींद्रनाथ ठाकुर, वंदे मातरम् के रचयिता बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय, पंडित श्यामनारायण पांडेय, बाल गंगाधर तिलक, पंडित जवाहरलाल नेहरू, भगत सिंह, सुभद्रा कुमारी चौहान, सोहनलाल द्विवेदी, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', दिनकर और शिवमंगल सिंह 'सुमन' जैसे साहित्यकारों ने अंग्रेजों के अत्याचारों से पीड़ित और निराश जनता के मन में स्वतंत्रता की चेतना जगाई, देश के प्रति प्रेम बढ़ाया।

हिंदी साहित्य ने स्वतंत्रता की चेतना को जन-जन तक पहुँचाने का महत्वपूर्ण कार्य किया। रचनाकारों ने अपनी लेखनी के माध्यम से लोगों में स्वाधीनता की भावना जाग्रत की और स्वतंत्रता प्राप्ति को एक साधना के रूप में प्रस्तुत किया। इस संदर्भ में सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की कविता 'वर दे वीणावादिनी वर दे' स्वतंत्र चेतना और संघर्षशील भावबोध की सशक्त अभिव्यक्ति करती है। यथा-

"नव गति, नव लय, ताल-छंद नव
नवल कंठ, नव जलद-मंद रव;
नव नभ के नव विहग-वृंद को
नव पर, नव स्वर दे!

वर दे, वीणावादिनी वर दे!"[6]

ऐसी कविताओं के माध्यम से कवि यहाँ नई चेतना, नवीन शक्ति और स्वतंत्रता की प्रेरणा माँग रहा है। यह कविता केवल संगीत या कला तक सीमित नहीं है, बल्कि जीवन और समाज में नव चेतना और जागृति लाने का संदेश देती है।समाज को अन्याय के विरुद्ध खड़े होने और आत्मसम्मान व स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा देती है।

स्वयं भारतेंदु हरिश्चंद्र जी ने 'भारत दुर्दशा' नाटक के माध्यम से भारत की दयनीय स्थिति और अंग्रेजों की भूमिका का अद्भुत चित्रांकन किया है। यथा-

"रोवहु सब मिलि के आवहु भारत भाई।
हा! हा! भारत दुर्दशा न देखी जाई॥"[7]

इस नाटक के माध्यम से भारतीयों को अपने देश की दयनीय स्थिति का बोध कराया है। लोग भारत की गुलामी, गरीबी, अज्ञानता और आपसी फूट को समझें और देश को सुधारने के लिए जागरुक हों।जब तक देशवासी जागरुक नहीं होंगे, शिक्षा नहीं अपनाएँगे और एकजुट नहीं होंगे, तब तक भारत का उद्धार संभव नहीं है।

इसी कड़ी में राष्ट्रवादी कवि मैथिलीशरण गुप्त को कैसे भूला जा सकता है? गुप्त जी हिंदी साहित्य के एक महान कवि और लेखक थे। गुप्त जी की रचनाओं में देशप्रेम, भारतीय संस्कृति, नैतिकता और आदर्शों का सुंदर चित्रण मिलता है। उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से भारतीयों में राष्ट्रीय चेतना जगाने का कार्य किया। उनकी भाषा सरल, प्रभावशाली और जनमानस के निकट है।

उनकी प्रसिद्ध रचनाओं में 'भारत-भारती', 'साकेत', 'पंचवटी', 'जयद्रथ-वध' और 'यशोधरा' प्रमुख हैं। भारत-भारती ने स्वतंत्रता आंदोलन के समय लोगों में देशभक्ति की भावना को प्रबल किया।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने लिखा है- " गुप्त जी की प्रतिभा की सबसे बड़ी विशेषता है कालानुसरण की क्षमता अर्थात उत्तरोत्तर बदलती हुई भावनाओं और काव्य प्रणालियों को ग्रहण करते चलने की शक्ति। इस दृष्टि से यह निस्संदेह हिंदी भाषी जनता के प्रतिनिधि कवि कहे जा सकते हैं। भारतेंदु के समय से स्वदेश प्रेम की भावना जिस रुप में चली आ रही थी उसका विकास भारत-भारती में मिलता है। इधर के राजनीतिक आंदोलनों ने जो रुप धारण किया उसका पूरा-पूरा आभास पिछली रचनाओं में मिलता है। इनमें हम सत्याग्रह, अहिंसा, मनुष्यत्ववाद, विश्व प्रेम, किसानों और श्रमजीवियों के प्रति प्रेम और सम्मान सबकी झलक पाते हैं।"[8]

साहित्यिक राष्ट्रवाद के परचम को लहराने वाले राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' केवल कवि नहीं थे। वे देशभक्ति, साहस और नैतिकता की शिक्षा देने वाले मार्गदर्शक भी थे। उनकी कविताएँ आज भी हमें कर्तव्य, साहस और राष्ट्र प्रेम की प्रेरणा से प्रेरित करती है।यथा:-

"सच है, विपत्ति जब आती है,
कायर को ही दहलाती है,
शूरमा नहीं विचलित होते,
क्षण एक नहीं धीरज खोते,

विघ्नों को गले लगाते हैं,

काँटों में राह बनाते हैं।"[9]

इस प्रकार हम देखते हैं कि सुभद्रा कुमारी चौहान के साथ-साथ विभिन्न साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से जन-जन में देश-प्रेम के प्रति जागृति का संदेश दिया है। सुभद्रा कुमारी चौहान ने पद्य के साथ-साथ गद्य में भी राष्ट्रीयता का आलोक फैलाया है। उन्होंने 'राही' कहानी के माध्यम से कहा "अनीता की आत्मा बोल उठी—वास्तव में सच्ची देशभक्ति तो इन ग़रीबों के कष्ट-निवारण में है। ये कोई दूसरे नहीं हैं, हमारी ही भारत माता की संतानें हैं। इन हज़ारों, लाखों भूखे-नंगे भाई-बहनों की यदि हम कुछ भी सेवा कर सकें, तो सचमुच हमने अपने देश की सेवा की।"[10] उद्धृत पंक्तियों से भी स्पष्ट होता है कि सुभद्रा कुमारी चौहान के हृदय में मुख्य रुप से भारत माता ही असीन थीं। इसका कारण उनके व्यक्तित्व और परिस्थितियों को ही समझा जाता है। सारस्वत- सुमन से सुरभित नैहर से निकलने के बाद भी वह विराट साहित्यिक गुलशन की ही मालिन बनकर ही ससुराल में आई। उसमें उनके पति भी राष्ट्रीय आंदोलन के जाँबाज सिपाही और प्रख्यात नाटककार सिद्ध हो चुके हैं। सुभद्रा जी पति के साथ गांधी जी की आह्वान पर अंग्रेजों का विरोध करती हुई जेल भी जा चुकी है। यही कारण है कि उनके साहित्य में राष्ट्र-प्रेम-ध्वज शान से लहराता हुआ दृष्टिगत हो रहा है।

सुभद्रा जी ने 'अमराई' कहानी में भी लिखा है- " एक तरफ राखी का चित्ताकर्षक दृश्य था, दूसरी ओर छोटे-छोटे बच्चे और बच्चियों झूले पर झूल रहे थे। उनके सुकुमार हृदय में भी देश प्रेम के नन्हे नन्हे पौधे प्रस्फुटित हो रहे थे। बहादुरी के साथ देश हित के लिए फांसी पर लटक जाने में वे भी शायद गौरव समझते थे। पहले तो लड़कियां कजली गा रही थी। एक छोटा बालक गा उठा–'झंडा ऊंचा रहे हमारा' फिर क्या था, सब बच्चे कजली वजली तो गए भूल ,और लगे चिल्लाने 'झंडा ऊंचा रहे हमारा'।"[11]

इस प्रकार हम देखते हैं कि सुभद्रा कुमारी चौहान की कि यह कहानी बच्चों में भी देश प्रेम के प्रति भावनाएं जागृत करती हैं। सुभद्रा जी के रोम रोम में देश प्रेम की भावना भरी हुई थी। इनकी भाषा शैली सरल, सहज, अर्थगम्य प्रतीत होती है। उनकी कहानियों में मुहावरेदार शब्दों की भी कमी नहीं है। राष्ट्रीयता की भावनाओं के साथ-साथ इन्होंने घर-परिवार-समाज में शोषित-पीड़ित, नारी की दयनीय स्थिति को भी हृदय की गहराइयों के साथ उजागर किया है। नारी नारी के द्वारा ही घर में उपेक्षित की जाती है। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण 'किस्मत' कहानी में देखा जा सकता है– "भौजी ,तुम सदा सफेद धोती क्यों पहनती हो?

मैं क्या बताऊं, मुन्नी।

क्यों भौजी! क्या तुम्हें अम्मा रंगीन धोती नहीं पहनने देतीं?

नहीं मुन्नी !मेरी किस्मत ही नहीं पहनने देती, अम्मा भी क्या करें?"[12]

इस कहानी के माध्यम से सुभद्रा जी यह बताना चाहती हैं कि कई बार इंसान अपनी किस्मत को ही दोष देता है जबकि वास्तव में उसके सुख दुख का कारण उसकी अपनी परिस्थितियाँ होती हैं।

सुभद्रा जी ने बहुत ही सरल स्पष्ट शब्दों में यह बताने का प्रयास किया है कि विपरीत परिस्थितियों में भी हमें धैर्य, हिम्मत और साहस के साथ आगे बढ़ना चाहिए। इसी प्रकार उन्होंने 'होली' कहानी में करुणा के माध्यम से समझदारी की बात कही है जो पति द्वारा जुए में जीते हुए पैसे को मिट्टी के समान समझती है। उसे हाथ तक नहीं लगाती। दृष्टिकोण कहानी में निर्मला' एक बहुत ही सरल, मिलनसार और विशाल हृदय वाली महिला है। विश्व प्रेम की उपासिका थी जो हर किसी के आचरण में भलाई देखती है। वह अपने घर में समाज द्वारा त्याग दी गई एक महिला मित्र बिट्टन को शरण देना चाहती है।इस कारण घर की सास और पति के साथ उसका विवाद हो जाता है, लेकिन अंततः वह अपने विचारों और सच्चाई पर अडिग रहती ह।

निष्कर्ष :– इस प्रकार हम कह सकते हैं कि राष्ट्रीय चेतना के प्रतिबिंब से प्रतिबिंबित सुभद्रा कुमारी चौहान ने पद्य के साथ-साथ गद्य में भी देश-प्रेम की भावना, नारी-शक्ति की भावना, जन- जागरण की भावना, भूखे, लाचार, पीड़ितों की सेवा की भावना हृदय की गहराइयों से चित्रित किया है। उनकी कविताओं और लेखन ने स्वतंत्रता आंदोलन को नई ऊर्जा दी तथा आम जनता, विशेषकर महिलाओं और युवाओं में देशप्रेम, साहस और बलिदान की भावना उत्पन्न की। उन्होंने अपनी लेखनी के माध्यम से ब्रिटिश शासन के अन्याय का विरोध किया और भारतीय संस्कृति, स्वाभिमान तथा राष्ट्रीय एकता को मजबूत करने का प्रयास किया।उनकी रचनाएँ यह सिद्ध करती हैं कि साहित्य समाज और राष्ट्र के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। "झाँसी की रानी", 'वीरों का कैसा हो वसंत', 'स्वदेश के प्रति' जैसी

कविताएँ और 'राही', 'हींगवाला', 'अमराई' कहानी आज भी लोगों में प्रेरणा और राष्ट्रीय चेतना जगाती हैं। इस प्रकार सुभद्रा कुमारी चौहान का साहित्य केवल काव्य-सौंदर्य नहीं, बल्कि स्वतंत्रता संग्राम की वैचारिक शक्ति भी था। उन्होंने अपनी कलम को क्रांति का हथियार बनाकर साहित्यिक राष्ट्रवाद को जनआंदोलन का स्वर प्रदान किया।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1. मिला तेज से तेज, सुधा चौहान, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद, 2021 ,पृ. 38
2. सुभद्रा समग्र, हंस प्रकाशन, द्वितीय संस्करण 2014 ,पृ. 56
3. वही, पृ. 146
4. वही, पृ. 111
5. वही, पृ. 104
6. निराला रचनावली भाग- 1, संपादक-अमरेश कुमार त्रिपाठी, राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण-1983 ई., पृ. 225
7. हिंदी साहित्य(नेट, जे. आर.एफ.) दृष्टि पब्लिकेशंस, मुखर्जी नगर, दिल्ली, द्वितीय संस्करण-2021, पृ. 86
8. हिंदी साहित्य का सरल इतिहास, विश्वनाथ त्रिपाठी, ओरिएंट ब्लैकस्वॉन हैदराबाद, प्रथम संस्करण 2007, पृ. 107
9. हिंदी साहित्य(नेट, जे. आर.एफ.) दृष्टि पब्लिकेशंस, मुखर्जी नगर, दिल्ली, द्वितीय संस्करण-2021, पृ. 34
10. सुभद्रा समग्र, हंस प्रकाशन, द्वितीय संस्करण 2014, पृ. 221
11. वही, पृ. 73
12. वही, पृ. 48